IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 11, Issue 1, November 2021
Impact Factor: 5.731

महाकवि भास एवं कालिदास के रूपकों में स्त्री वर्णन

Dr. Dhani Jamod
Maharshi Panini Sanskrit Evam Vedic Vishwavidyalaya, Ujjain, Madhya Pradesh

नारी धर्म, अर्थ और काम की प्रदात्री, वैभव, सौरव्य की जननी गृहलक्ष्मी का स्थान प्रदान किया गया है तथा स्त्री को सर्वपूज्या भी समझा जाता है। 1

भारतीय स्त्री इतिहास का अभिन्न अंग है। नर – नारी सामाजिक जीवन में स्त्री–पुरूष, रथ के दो पहिये के समान माने जाते है, जो किसी एक के बिना दूजा अपूर्ण माना गया है। स्त्री और पुरूष दोनों की प्रकृति और कृति भिन्न–भिन्न हो सकती है, लेकिन दोनों का ही लक्ष्य भिन्न नहीं हो सकता। स्त्री के जीवन के आधार पर ही पुरूष का जीवन बनता है। इसीलिए नारी को अबला भी कहा गया है। स्त्री के विभिन्न रूपों के विषय में महाकवि तुलसीदास ने कहा है कि – ''ढोल गंवार षूद्र पषु नारी सकल ताडना के अधिकारी''।

आदिकाल से ही स्त्री को पुरूषों से अधिक महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है किन्तु धीरे–धीरे पुरूषों ने सत्ता को अपने हाथ में ले कर स्त्री का स्थान नीचे कर दिया है।

नाटयषास्त्र में भरतमुनि ने नारी के विषय में कहा है –''सर्व प्रयणि लोकोडयं सुखमिच्छति सर्वद, सुखस्य च स्त्रियोमूलं नानाषीलधराश्च''। 2 मनु स्मृति में राजा मनु ने नारी की प्रषंसा करते हुए कहा है कि– ''यत्रनार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्रं देवताः। 3

अन्ततः यह स्पष्ट होता है कि प्राचीन संस्कृत साहित्य में कही पर नारी की प्रषंसा की गई है तथा कहीं पर निन्दा भी की गई है। महाकवि भास एवं कालिदास के नाटकों में स्त्री का रूप, समाज में स्त्री की स्थिति, षिक्षा एवं सामाजिकता तथा स्वतन्त्रता प्राप्त है।

माता के रूप में स्त्रीः

संस्कृत साहित्य में माता को अत्यन्त सम्मानजनक स्थान दिया गया है। स्त्री का वैदिक युगीन देवी पद लुप्त हो चुका था, फिर भी समाज में माता को देवी के रूप में देखा जाता था। स्त्री का स्थान परिवार में मातृत्व के आधार पर निष्चित होता था तथा माता को देवता से भी अधिक पूजनीय माना जाता था–माता किल मनुष्यार्ण देवतानां च दैवतम् ।4

माता के लिए अकरणीय कार्य भी किये जा सकते थे मध्यमव्यायोग में घटोत्कच माता के व्रत के पारायण ब्राह्मण की हत्या करने को तैयार हो जाता है – अकार्यमेतच्च मयाऽद्य कार्य मातुर्नियोगादपनीय षड्काम् ।5

कर्णभारम् में कर्ण मॉ के कहने पर युद्ध के प्रति विरक्ति की आषंका से युक्त हो जाता है – अयं से कालः पुनश्चयातुर्वचनेनवारितः ।6

मॉ भी सन्तान के प्रति अपना कर्तव्य पूरा करती थी निःसंतान स्त्री का जीवन व्यर्थ माना जाता था। महाकवि कालिदास ने अपने रूपक त्रोटक में कहा है कि पुरूरवा उर्वषी को पुत्रवती का स्वागत है ऐसा कहकर आसन पर बैठाया जाता है तथा श्रेष्ठता का वर्णन किया गया है। पुत्र दर्षन से ही मॉ का रोम–रोम पुलकित हो उठता था 7

ष्यही उसके मातृत्व की सार्थकता थी। माता को सर्वपूज्या माना जाता था।

पत्नी के रूप में स्त्रीः

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 11, Issue 1, November 2021
Impact Factor: 5.731

माता का ही दूसरा रूप पत्नी माना गया है तथा पत्नी को ही परिवार में गृहलक्ष्मी का पद प्राप्त होता था–अद्य अर्धरात्रेऽस्माकम् कुटुम्बिन्या यषोदा।8

ष्कुटुम्बिनी षब्द से यह स्पष्ट होता है कि नारी का कार्य परिवार तक ही सीमित था। वह गृहस्वामिनी होती थी। घर की आंतरिक व्यवस्थाओं की ठीक से देख –भाल करना तथा बहुत अच्छा गृहकार्य का संचालन करती है। पारिवारिक समस्याओं के विषय में पति अपनी पत्नी से विचार विमर्ष करता था। जैसे ''प्रतिज्ञायौगन्धरायण'' में राजा महासेन अपनी पुत्री के विवाह के विषय में अपनी धर्मपत्नी से सलाह लेते है – ऐते नानापैलेभयन्तें गुणैर्गां कस्ते वैतेषा पात्रता पात राजा।9

पत्नी अपने पति के लिए महान त्याग करने के लिए तैयार रहती थी। महाकवि भास के ''स्वप्नवासवदत्तम्'' में वासवदत्ता अपने पति के उत्कर्ष कार्य हेतु समस्त राजसी–ऐष्वर्य का त्याग करके प्रच्छन्न वेष में रहती है और अपने पति का दूसरा विवाह पद्मावती के करने को तैयार हो जाती है।10

''प्रतिमानाटक'' में सीता वन जाते समय अपने प्राणपति भगवान श्री राम का निष्ठा से अनुसरण करती है–ब्रजतु चरतु धर्ममर्तृनाथा हि वार्यः।11

पत्नी पति की सहधर्मचारिणी होती थी –ननु सहधर्मचारिणी खल्वहम्।11

महाकवि कालिदास का सर्वोत्कृष्ट नाटक ''अभिज्ञानषाकुन्तलम्'' में पत्नी को गृहिणी पद से सुषोभित किया गया है – अभिजनवतो भर्तुः श्लाघ्ये स्थिता गृहिणीपदे। इसी प्रकार भास के चारूदत्त रूपक में स्त्री को साक्षात् त्याग की प्रतिमूर्ति माना गया है।

कन्या के रूप में स्त्रीः

स्त्री का प्रथम रूप कन्या तथा पुत्री होता है। वण्ययुगीन संस्कृति में स्त्री विवाह से पूर्व सामाजिक और आर्थिक दृष्टि से परतन्त्र होती थी। कन्या का जन्म प्राचीन युग से ही अत्यन्त दुःखद माना जाता था तथा पिता अपनी अविवाहित पुत्री के लिए घोर चिन्तित रहता था।

कवि कालिदास के रूपक ''अभिज्ञानषाकुन्तलम्'' से स्पष्ट है कि ''कन्या को पराया धन कहा गया है, जिसे माता–पिता न्यास रूप समझते है। जन सामान्य कन्या के विवाहोपरान्त उसी तरह निष्चित हो जाता था, जिस तरह कोई व्यक्ति न्यास से लौटकर निष्चिन्त हो जाता है। 12

कालिदास ने मनुस्मृतिकार मनु की तरह स्त्री स्वतन्त्रता को वर्जित बताया है। विवाहोपरान्त कन्या पर पति की सर्वतोन्मुखी सत्ता रहती थी –''उपपन्ना हि दारेषु प्रभुषा सर्वतामुखी'' 13

वैवाहिक चिन्ताओं के कारण ही कन्या जन्म को दुःखद माना जाता है।

विधवा के रूप में स्त्रीः

विधवा षब्द से तात्पर्य यह होता है कि ''विगतः धवः'' अर्थात् पति रहित स्त्री। स्त्री के पति का देहान्त हो जाने पर स्त्री के जीवन को महान् दुर्भाग्य समझा जाता था तथा स्त्रियों के लिए वैधव्य अभिषाप स्वरूप था। विधवा को समाज में हेय दृष्टि से देखा जाता था जैसे – महाकवि भास के रूपक दूतघटोत्कच में अभिमन्यु का वध हो जाने पर धृतराष्ट, दुर्योधन आदि अपने पुत्रों को कहते है कि अनेक पुत्रों वाले इस कुल में सौ पुत्रों से भी अधिक प्यारी केवल एक पुत्री है और हम तुम भाइयों की कृपा से निन्दनीय वैधव्य को प्राप्त करेगी। 14

इससे यह स्पष्ट होता है कि विधवा का समाज में कोई विषेष स्थान नहीं था। वही नाटक पंचरात्रम् में वृज्ञ गोपालक गोपर में वृद्ध गोपालक गोप – युवतियों को ऐसा ही आषीर्वाद देता है –''अविधवाश्च गोपयुवतयो भवन्तु''। 15

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 11, Issue 1, November 2021
Impact Factor: 5.731

दूसरे की पत्नी को विधवा बनाने वाले अपनी पत्नी के लिए वैधव्य मोल लेता था तथा विधवा स्त्री का वेष भी पृथक् होता था और विधवा स्त्री का जीवन तपस्विनी स्त्री की तरह होता था–''येनेदानी वध्वैउत्तरयै वैघव्य दत्तै, तेनात्मनो युवतिजनाय वैधव्यतादिष्टम्'' 16

महाकवि कालिदास के रूपक ''मालविकाग्निमित्रम्'' में विधवा स्त्री के लिए कहा गया है कि 'पुनर्नवीकृत वैधव्य दुखखा' कहने पर विधवा की दयनीय स्थिति या अवस्था स्पष्ट होती है। 17

इस प्रकार स्पष्ट होता है महाकवि भास एवं कालिदास के रूपकों या प्राचीन समय में भी विधवाओं को समाज में कोई विषेष या आदरणीय स्थान प्राप्त नहीं था।

वेष्या या गणिका के रूप में स्त्री:

स्त्री का वेष्या या गणिका रूप वैदिक काल से ही समाज में चला आ रहा है तथा भोग–विलास के मद में मस्त राजाओं के भवनों में गणिकाएँ हमेषा रहती थी । वेष्या षब्द की उत्पति ''हृदयं विवष्यतीति वेष्या युद्धा वेषन जीवतीति वेष्या''। 18

वेष्याओं को समाज में घृणा की दृष्टि से देखा जाता था इन्हें धन के लिए हॅसने वाली व धन के लिए रोने वाली तथा धन ही के लिए पुरूषों को विष्वास दिलाने और स्वयं विष्वास न करने वाली कहा जाता था। 19

वेष्या और गणिका में पृथकता:

पृथकता की दृष्टि से देखा जाय तो वेष्या की तरह सभी गणिका केवल धन की ही इच्छा करने वाली नहीं होती थी तथा कूछ गणिका धन की अपेक्षा गुणों का सम्मान करने वाली होती थी। 19

उदाहरण के लिए वसन्तसेना। वसन्तसेना धनहीन, परन्तु सदाचारी चारूदत्त से प्रेम करती थी और धनसम्पन्न राजष्यालक से घृणा करती थी – 19

महाकवि भास ने भी वसन्तसेना और चारूदत्त को प्रेमिका और प्रेमी के रूप में चित्रित किया है। इससे ज्ञात होता है कि वेष्या को उस समय घृणित तो अवष्य समझा जाता था परन्तु अछूत नहीं समझा जाता था क्योंकि नगर के प्रसिद्ध एवं श्रेष्ठ व्यक्ति भी वेष्याओं से सम्बन्ध रखते थे।

समाज में स्त्री की स्थिति:

सती–प्रथा के कारण स्त्रियों को समाज में अनेक यातनाएँ झेलनी पडती थी । स्त्रियॉ अपना विधवा जीवन व्यतीत करना बिल्कुल भी उचित नहीं समझती थी इसीलिये स्त्रियॉ पति के साथ ही सती हो जाती थी–एककृतप्रवेषनिश्चया न रोदिमि। 20

पर्दा – प्रथा:

महाकवि भास एवं कालिदास के रूपकों से ज्ञात होता है कि पर्दा – प्रथा का भी अस्तित्व समाज में व्याप्त था जैसे – ''प्रतिमानाटकम्'' में सीता वन – गमन के समय मार्ग में घूघॅट निकाल कर चलती है। 21

इसी प्रकार ''अभिज्ञानषाकुन्तम्'' में षकुन्तला तपस्वियों के साथ दुष्यन्त के दरबार में अवगुण्ठनवती होकर जाती है। उसको देखकर राजा दुष्यन्त कास्विदव–गुष्ठनवती नाति परिस्फुट षरीर लावण्य कहता है। 22

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 11, Issue 1, November 2021
Impact Factor: 5.731

उस समय अवगुण्ठन समाज में स्त्री की विनयषीलता और लज्जा का प्रतीक समझा जाता था। जब दुष्यन्त षकुन्तला से विवाह करने की बात को स्मरण नहीं कर पाते, तो गौतमी ने षकुन्तला को लज्जा का त्याग कर घूघॅट हटाने के लिए कहा है। 22

षिक्षा में स्त्री का स्थानः

षिक्षा के क्षेत्र में स्त्री का अपना श्रेष्ठ स्थान था तथा स्त्री षिक्षा पुरूष षिक्षा के समान ही आवष्यक मानी जाती थी। स्त्री को आदर्ष पत्नी एवं विदूषी बनाने के लिए स्त्री षिक्षा को अत्यन्त महत्वपूर्ण माना गया है। षैक्षिक क्षेत्र में नारी स्वतन्त्र थी। जैसे –प्रतिज्ञायौगन्धरायणम् में, वासवदत्ता का वीणावादन की षिक्षा गृहण करने का उल्लेख मिलता है। 23

इसी प्रकार महाकवि कालिदास के रूपकों में भी अनेक षिक्षित स्त्रियों का उल्लेख मिलता है। जैसे – षकुन्तला की सखियॉ षकुन्तला को दुष्यन्त को पत्र लिखवाती है तथा यही पत्र षकुन्तला के षिक्षित होने का प्रमाण है। 24

''अभिज्ञानषाकुन्तलम्'' में भी षकुन्तला की दोनों सखियॉ अनसूया और प्रियंवदा षिक्षित प्रतीत होती है क्योंकि वे दुष्यन्त की नामांकित मुद्रिका से दुष्यन्त का नाम पढती है। 24

कला की षिक्षाः

उस समय षिक्षा के साथ–साथ स्त्रियों को ललित कलाओं की षिक्षा भी दी जाती थी जैसे–''मालविकाग्निमित्रम्'' में मालविका को नृत्य विषारदा कहा गया है – ''भो वयस्यु न केवल रूपे षिल्पे अप्यद्वितीया मालविका''। 25

वसन्तसेना को विभिन्न कलाओं में दक्ष बताया गया है।

अन्ततः ज्ञात होता है कि कवि भास एवं कालिदास के समय स्त्रियों को दो प्रकार की षिक्षा और संगीत आदि विभिन्न कलाओं की व्यवहारोपयोगी षिक्षा की स्वतन्त्रता थी। भास एवं कालिदास के समय स्त्री सामाजिक व आर्थिक दृष्टि से परतन्त्र थी।

सामाजिक स्वतन्त्रताः

महाकवि भास ने स्त्री के लिए पति को ही सर्वस्व कहा है जैसे –''प्रतिमारूपकम्'' में सीता ने राम के साथ वन में जाने की इच्छा व्यक्त की तो लक्षमण ने कहा –'मर्तृनाथ हि नार्यः' कि पति ही स्त्री का स्वामी है। जब पति वन में जा रहे है तो पत्नी को भी अवष्य वन में जाना चाहिए। इससे ऐसा प्रतीत होता है कि स्त्री को अपना कोई स्वतन्त्र व्यक्तित्व नहीं था। 26

मध्यमव्यायोग में केषवदास ब्राह्मण राक्षस को अपना षरीर देकर अपने परिवार की रक्षा करना चाहता है लेकिन उसकी पत्नी कहती है कि पतिव्रता स्त्री के लिए उसका पति ही धर्म है। इसी लिए परिवार की रक्षा के लिए मैं अपना षरीर राक्षस को देना चाहती हूॅ–आर्य मा मैवम्! पतिमात्र धर्मिणी प्रतिवृतेति नाम। गुहित फलेनैतेन षरीरेणार्थ कुलं च रक्षितुमिच्छामि। 27

आर्थिक स्वतन्त्रताः

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 11, Issue 1, November 2021
Impact Factor: 5.731

महाकवि भास के समय में स्त्रियॉ अर्थोपार्जन नहीं करती थी लेकिन गणिका स्वयं अर्थोपार्जन करती थी और व समृद्धिषालिन होती थी तथा गणिका की स्थिति सामान्य स्त्री पर लागू नहीं हो सकती।

अभिज्ञानषाकुन्तलम् में सेठ धनमित्र की सम्पति राजकीय होने वाली थी, क्योंकि निःसन्तान होते हुए उसकी मृत्यू हो गई थी। इससे प्रतीत होता है कि पत्नी अपने पति की स्वामिनी तो नहीं थी, परन्तु उस सम्पति का उपभोग अवष्य करती थी। 28

इस प्रकार उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि भास एवं कालिदास के समय स्त्रियॉ सामाजिक और आर्थिक दृष्टि से पुरूषों के समान स्वतन्त्र नहीं थी।

निष्कर्ष :–

उक्त विवेचन से निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि महाकवि भास एवं कालिदास के समय मे समाज में स्त्री की सामाजिक स्थिति प्रायः समान थी जैसे – सती –प्रथा, पर्दाप्रथा, सामाजिक व आर्थिक स्वतन्त्रता ।

उस समय सती –प्रथा तथा पर्दाप्रथा का प्रचलन था परन्तु स्त्री को पुरूष के समान स्वतन्त्रता नहीं थी तथा अर्थोपार्जन भी नहीं करती थी।

लेकिन वर्तमान समय में बदलती परिस्थितियों के साथ सामान्य जनजीवन में प्रचलित संस्कृतियां भी बदल गयी। सती प्रथा आज प्रायः मृत हो गयी है लेकिन पर्दाप्रथा आज भी अनेक स्थानों पर देखने को मिलती है। स्त्री सामाजिक और आर्थिक रूप से भी स्वतन्त्र है। अब स्त्री हर क्षेत्र में पुरूष के साथ कंधे से कंधा मिलाकर कार्य करती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची:

1. ऋग्वेद – 5.61.6, 5.61.7, 8.33.17, 10.95.15,
2. नाटयषास्त्र – 20.93,
3. मनुस्मृति –3.56,
4. मध्यमव्यायोग 1.8
5. मध्यमव्यायोग
6. कर्णभारम् –1.8
7. विक्रमोर्वषीयम् –5.12, पृष्ट –248,
8. बालचरितम्,
9. प्रतिज्ञायौगन्धरायण –2.8,
10. स्वप्नवासवदतम् –1.7,
11. प्रतिमानाटक –1.25,1.29,4.49,
12. अभिज्ञानषाकुन्तलम् –4.22,
13. प्रतिमानाटक –5.23,
14. दूतघटोत्कच –1.16,
15. प्रतिमानाटक –पृ.–389,
16. दूतवाक्यम् पृ. –9,
17. मालविकाग्निमित्रम् – अंक –5,
18. याज्ञ. स्मृति –1.141,
19. चारूदत्तम्

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 11, Issue 1, November 2021
Impact Factor: 5.731

20. उरूभंगम् पृ.–38,
21. प्रतिमानाटक –पृ. 44,
22. अभिज्ञानषाकुन्तलम् –5.13, अंक –5,
23. प्रतिमानाटक –द्वितीय अंक पृ. –52,
24. अभिज्ञानषाकुन्तलम् पृ.48, तृतीय अंक, प्रथम अंक,
25. मालविकाग्निमित्रम् द्वितीय अंक,
26. प्रतिमानाटक –1.25,
27. मध्यमव्यायोग प्रथमअंक,
28. अभिज्ञानषाकुन्तलम् षष्ठ अंक,